ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-I* Issue-VI* September-2016
Anthology : The Research

साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम और निराकरण

सविता सहारे
शोधार्थी,
राजनीति विज्ञान एवं शोध केन्द्र विभाग,
रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय
जबलपुर

सारांश

''ईक्कीसवीं शताब्दी की भारतीय राजनीति के बड़े संकटों की जड़ में राष्ट्रवाद और साम्प्रदायिकता दो महत्वपूर्ण कारक रहे है। राष्ट्रवाद तो आकांक्षा रही है जबकि साम्प्रदायिकता बीमारी और इन दोनों ने अपने–अपने तरीके से भारतीय राजनीति के स्वरूप का निर्धारण किया है।'' यह एक ऐतिहासिक सत्य है कि जब–जब धर्म और राजनीति का सम्मिलन हुआ है, इसका परिणाम समाज के लिए दुःखद हुआ है। मध्यकालीन यूरोप का इतिहास इसका जीता–जागता उदाहरण है। इसी कारण आधुनिक यूरोपीय राष्ट्रीय राज्यों के मामलों में धर्म की भूमिका को एकदम नकारते हुये धर्म निरपेक्षता की धारणा को अंगीकार किया। भारत में ब्रिटिश जनों ने तो धार्मिक समुदायों को एक–दूसरे के विरूद्ध नियोजित किया ही, स्वतंत्र भारत में भी धर्म और राज्य के मध्य अन्तः क्रिया ने साम्प्रदायिकता की समस्या को राज्य के मध्य अन्तः क्रिया ने साम्प्रदायिकता की समस्या को जन्म दिया। स्वतंत्रता के बाद से ही भारतीय राजनीतिक व्यवस्था में साम्प्रदायिक शक्तियां बलवती होती गयी और आज स्थिति यह हो गयी है कि इसके द्वारा हमारी राज्य व्यवस्था के आधार पर प्रहार किया जा रहा है। इसका वीभत्स स्वरूप कहां देखने को मिलता है। समकालीन भारत में साम्प्रदायिकता दो विशिष्ट कारणों से खतरनाक आयाम ग्रहण कर चुकी है। एक तो यह कि अब साम्प्रदायिकता की मनोवृत्ति केवल शहरों तक ही सीमित नहीं रह गयी है यह अब सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में भी तेजी से प्रसारित हो रही है। दूसरी बात यह है कि अब साम्प्रदायिकता क्रमशः जन आंदोलन का रूप लेती जा रही है। राम जन्म भूमि, बाबरी मस्जिद प्रकरण इसका उदाहरण है।

मुख्य शब्द : राष्ट्रीय एकता, राजनीतिक जागरूकता, राजनीतिक स्वार्थपरता, प्रशासन की अर्कमण्यता, धार्मिक सहिष्णुता, नैतिकशिक्षा, न्यायिक प्रशासन।

प्रस्तावना

सामान्यतया साम्प्रदायिकता का अभिप्राय अपने विशिष्ट सम्प्रदाय के हितों की तुलना में अधिक महत्व तथा प्राथमिकता देना अथवा अन्य सम्प्रदाय के लोगों के प्रति वैमनस्य का भाव विकसित करना है किसी धर्म अथवा धार्मिक व्यवस्था के प्रति प्रतिबद्धता साम्प्रदायिकता नहीं हैं। परंतु धर्म अथवा धार्मिक व्यवस्था का निहित स्वार्थों के लिए दुरूपयोग साम्प्रदायिकता है, किसी धार्मिक सम्प्रदाय के प्रति विशेष लगाव अथवा धर्मबद्धता साम्प्रदायिकता नहीं है। परंतु एक धार्मिक सम्प्रदाय को अन्य धार्मिक सम्प्रदायों अथवा राष्ट्र के विरूद्ध प्रयोग करना साम्प्रदायिकता है। एस प्रकार साम्प्रदायिकता धर्म का अनुचित शोषण है।

साम्प्रदायिकता का जन्म और आरंभिक पोषण 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 20 वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में ब्रिटिश उपनिवेशवाद के अन्तर्गत हुआ। ब्रिटेन उपनिवेशवाद का मूल आधार ही 'विभाजित करे और शासन करो' रहा था, अंग्रेजों ने बड़ी चालाकी से इस नीति को व्यवहार में लागू किया। दोनों सम्प्रदायों के बीच विद्यमान धार्मिक मतभेदों के आधार पर उन्होंने सर्वप्रथम सामाजिक और सांस्कृतिक विभिन्नताओं को उभारा और तदोपरान्त इन्ही विभिन्नताओं के आधार पर उन्होंने राजनीतिक विभाजन को जन्म दिया।

उद्देश्य

1. सामाजिक एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं के कारण राजनीतिक विभाजन होना।
2. राष्ट्र के प्रति सार्वभौमिक विचारधारा विकसित करना।
3. जातिवादी और धार्मिक कट्टरता की भावना को समाप्त करना।
4. सर्वांगीण व्यापक नैतिक शिक्षा का प्रचार–प्रसार करना।
5. रूढ़ीवादी और संकीर्ण मानसिकता को दूर करना।

साम्प्रदायिकता के उद्भव के कारण और दुष्परिणाम

स्पष्टतः साम्प्रदायिकता की धारणा 'हिन्दुत्व' और 'मुस्लिम उग्रवाद' की पृथकवादी और स्वयं को उत्कृष्ट मानने की सोच पर आधारित है जो सम्भवतः मुस्लिम बाह्य आक्रमणकारियों के भारत में आगमन के साथ उदित हुई और ब्रिटिश राज के फलस्वरूप वर्तमान परिदृश्य में निम्नलिखित कारणों से प्रोत्साहित हो रही है –

राष्ट्रवादी आक्रामकता

किसी राष्ट्र के अस्तित्व के निर्माण और स्थायित्व में वहाँ की जनता के मन में स्थित निष्ठा, प्रेम और आदर की भावना की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, राष्ट्र–प्रेम व एकता राष्ट्र के प्राण है, यह एक 'स्वभावना' है, जो सभी राष्ट्रवादियों में पाई जाती है और होनी भी चाहिए, किन्तु जब यही भावना अति की सीमा लांघकर उग्र रूप धारण कर ले, तो इसे ही 'राष्ट्रवादी आक्रामकता' कहा जाता है, हमारा देश सदियों से अपनी विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक, सामुदायिक सांझा सभ्यता व संस्कृति का विश्व–आदर्श रहा है, किन्तु स्वतंत्रता के बाद जिस तरह देश–प्रेम की भावना कब स्वार्थपूर्ण मांग और विभाजन में बदल गई, उसका कारण खोजना इतना आवश्यक नहीं, जितना कि इसके सार्थक उपाय करना, आज कुछ तुच्छ प्रकृति के व्यक्ति अपनी संकीर्ण सोच से देश की अखण्डता को मिटा देना चाहते है, कभी भाषा, कभी धर्म या जाति और कभी किसी अन्य कारणों से समय–समय पर देश के विभिन्न भागों में तेलंगाना, गोरखालैण्ड, इत्यादि हरित प्रदेश आदि माँगे तथा अभी हाल ही में महाराष्ट्र राज्य के मुम्बई शहर में राष्ट्रवादी भावना का जो खून किया गया, वह भी केवल प्रादेशिक पृथक् अस्मिता की रक्षा के नाम पर राष्ट्र की आत्मा पर किया गया गंभीर प्रहार है। लोकतंत्र की पहचान कहे जाने वाले देश में हिन्दी भाषी, उत्तरवासी, बिहारी व्यक्तियों के प्रति पृथकवाद की भावना अन्ध क्षेत्रवाद का प्रमाण है, हमारे देश के संविधान में प्रत्येक व्यक्ति को बिना किसी भेदभाव व दबाव के कोई भी धर्म अपनाने, व्यापार करने, रहने, आने–जाने, विचार व्यक्त करने आदि के मौलिक अधिकार दिए गए है, जिन्हें ये भ्रष्ट नेता और व्यक्ति अपनी दुष्टता से छीन रहे हैं।

अतिवादी राष्ट्रवाद

राष्ट्र के प्रति व्यक्त की जाने वाली हमारी नैसर्गिक भावना कभी–कभी कृत्रिम रूप से अपना लेती है, वर्तमान काल में हम ऐसे समाज में जी रहे है, जो आधुनिकता के खंभों पर खड़ा है, जो पश्चिमी समाज की सौगात है, हमें आज वैसा दिखने और कार्य करने में शर्म महसूस होती है, जो यथार्थ है अर्थात् हमारी देशवादी भावना भी हमारी दिखावटी संस्कृति का हिस्सा बन गई है। हम आधुनिकता के चोले में सत्यवादी देशभक्त प्रदर्शित होना चाहते है, जबकि यह सद्भाव हमारे अर्न्तमन से कही दूर हो चला है, फिर भी हम दूसरों को यह बताना चाहते है कि हम सच्चे राष्ट्रप्रेमी है।

धार्मिक अन्धवाद तथा कट्टरता

प्रत्येक व्यक्ति को अपनी आस्था और श्रद्धा के अनुसार किसी भी धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने का पूरा अधिकार होता है, यह अधिकार हमारे संविधान के अनुच्छेद 25 से 28 तक में दिया गया है, संसार में अनेक धर्म व मत पाए जाते है, किन्तु अधिकतर धर्मों का जन्म–स्थल है, हमारा देश–भारत हमारा देश हिन्दू, मुस्लिम, सिख, जैन, बौद्ध, ईसाई आदि धर्मों का मिश्रित संगम है, हमारे प्राचीन और स्वतंत्रताकालीन इतिहास में धार्मिक एकता व सहिष्णुता की अद्भुत मिसाल पेष करने वाले असंख्य उदाहरण है, मुस्लिम कवि रसखान, श्रीकृष्ण के परम भक्त थे। कबीरदास जी के गुरू रामानन्द थे मुगल बादषाह अकबर के दरबार में तानसेन, बीरबल, राजा टोडरमल जैसे प्रसिद्ध और प्रभावशाली हिन्दू थे। धार्मिक कट्टरता आज आंतकवाद का रूप ले चुकी है और इसमें धार्मिक बुद्धिजीवियों व प्रतिनिधियों द्वारा समय–समय पर दिए जाने वाले पंचायती निर्णय और भड़काऊ बयान समाज को दो हिस्से करने पर हर प्रकार से तुले हैं।

राजनीतिक महत्वाकांक्षा

राजनीतिक सत्ता प्राप्ति की लालसा भी साम्प्रदायिकता के कारकों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, आधुनिक राजनीति पूर्णतः धर्म व जाति पर आधारित हो गई है, विभिन्न दल समाज को धर्म, सम्प्रदाय व जाति में बाँटकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेते है, जनता बिना सोचे–समझे बस अपनी जाति व धर्म के व्यक्तियों का साथ देती है, जबकि नेता केवल उन्हें सत्ता प्राप्ति के साधन मानते है, राजनीतिक महत्वाकांक्षा रखने वाले व्यक्ति लोगों को तैयार करने में लगे रहते है, जिससे समाज पर विनाशकारी प्रभाव पड़ता हैं।

स्वार्थपूर्ण सोच

आज व्यक्ति की सोच और विचारधारा इतनी संकुचित हो गई है, कि वह केवल अपने परिवार, धर्म, समुदाय, जाति के बारे में ही सोचता है, यह विचार व्यक्ति को जंजीर में जकड़ देता है, उसका मस्तिष्क कुन्द हो जाता है, उसका दृष्टिकोण सिमटता चला जाता है, उसे हर समय अपना हित सूझता है, साम्प्रदायिकता के इस कारण को प्रत्यक्ष उदाहरण 67 मुस्लिम देशों का संगठन ओ आई सी है, जो एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय मांग पर बनाया गया कि इस्लाम संबंधी किसी विषय पर राजनीतिक या मीडिया चर्चा को प्रतिबंधित किया जाए तथा सभी मजहबों के प्रति आदरभाव रखा जाए, किन्तु उनकी इस सद्भाव–अपील में हिन्दू और बौद्ध धर्म शामिल नहीं थे स्पष्ट है कि दुनिया के वरिष्ठतम् बुद्धिजीवी तक अपना दृष्टिकोण संतुलित और समन्वयकारी नहीं रख पाते।

सत्ता के प्रति असंतोष

सरकार के प्रति बढ़ते हुए असंतोष ने समाज को वर्गों के रूप में टुकड़ों में विभाजित कर दिया। प्रत्येक चुनाव में विभिन्न राजनीतिक दलों का कोई धर्म या जाति से जुड़ा मुद्दा अवश्य होता है, जैसे– भाजपा का राम मन्दिर या सेतु समुन्द्रम, कांग्रेस का तुष्टीकरण, बसपा की दलित नीति, सपा का अंगड़ी जाति प्रेम, कम्युनिष्टों का वामपथ आदि इसके अतिरिक्त आरक्षण की ज्वलंत मांग जिसमें पिछड़े और अल्पसंख्यक जैसे शब्द लोगों की भावनाओं को भड़काकर एक–दूसरे का शत्रु बना रहे है, इस प्रकार सरकार के इस राजनीतिक खेल में समाज साम्प्रदायिकता जैसे भंयकर संकट की चपेट में आ जाता

है, मुस्लिम आरक्षण व गुर्जर आरक्षण इसके त्वरित उदाहरण हैं।

प्रशासन की अकर्मण्यता

देश में विद्यमान नौकरशाही प्रशासन के नाम पर केवल राज करती है, प्रशासनिक तंत्र में व्याप्त भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और लापरवाही ने लोगों का जीना दूभर कर दिया है, नियुक्ति होते ही अधिकारीगण अपनी ऐश–परस्त, उत्तरदायित्व हीन जिन्दगी में खो जाते है, लंदन के एक साप्ताहिक 'इको–नॉमिस्ट' ने कहा कि 'भारत के तीव्र विकास में नौकरशाही सबसे बड़ा रोड़ा है,'' वास्तव में प्रशासन की स्वेच्छाचारिता पर भी सम्प्रदाय, धर्म, जाति से संबंधित व्यक्तियों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभाव अवश्य पड़ता है, जो बाद में राजनीतिक और अन्ततः साम्प्रदायिक रूप ले लेता हैं।

अस्तित्व के प्रति असुरक्षा की भावना

साम्प्रदायिकता के कारणों में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारण है, लोगों के मन में बढ़ती जा रही अपने अस्तित्व की सुरक्षा की चिन्ता, सम्प्रदाय जनित हिंसा कब तबाही के हालात पैदा कर दे, कहना मुश्किल है, सम्प्रदायवाद का जहर आज इतना फैल चुका है कि छोटी–सी दुर्घटना को भी लोग तूल देकर कहीं का कहीं पहुंचा देते है, जैसा कि धार्मिक स्थलों में मांस के टुकड़े पाया जाना, दीपावली के मौके पर आतिशबाजी की वजह से सम्प्रदाय विशेष का भिड़ जाना या होली में रंग लगाने पर विवाद उठना, इसके अलावा धार्मिक जुलूस में अत्यधिक जोश प्रस्तुत करना या शस्त्रों का प्रदर्शन, यद्यपि वो शान्तिपूर्ण ही होता है, आज इसी वजह से लोगों का आपसी विश्वास, सौहार्द्र व भाई–चारा समाप्त होता जा रहा है लोग अपने घरों में भी खुद को सुरक्षित नहीं महसूस कर रहे है, आत्मरक्षा में वे अनजाने में गलत लोगों के संपर्क में आकर ऐसी राह पर मुड़ जाते है, जो उन्हें आगे ले जाकर आतंकवाद के घिनौने समाज का अंग बना देता है।

शिक्षा की संकीर्णता

'सम्प्रदायवाद' शब्द की अवधारणा ही हिन्दुत्व और मुस्लिम सम्प्रदाय के पारस्परिक वैचारिक मतभेद से की जाती है, मुस्लिम समाज का एक वर्ग रूढ़िवादी और संकीर्ण मानसिकता से ग्रस्त रहा है, स्त्रियों की शिक्षा पर रूकावट, पर्दा प्रथा तथा धार्मिक शिक्षा का प्रसार आदि ने उन्हें शिक्षा के वास्तविक अर्थ और उद्देश्य से काफी दूर कर दिया। सच्चर समिति का उद्देश्य यहीं था कि मुस्लिम समाज की बुनियादी समस्याओं का पता लगाकर उन्हें दूर किया जाए, किन्तु इसका विरोध किया गया, इन्होंने शिक्षा को केवल धर्म के प्रसार का साधन माना, जबकि शिक्षा व्यक्ति के जीवन के हर पहलू का व्यापक और उसकी विचारधारा के विकास का साधन है।

निरर्थक सेकुलरवाद

आजादी के सूर्य के साथ ही महात्मा गांधी ने भारत में 'रामराज्य' की कल्पना की थी, लेकिन कम्युनिस्टों की आभा से ग्रस्त पंडित नेहरू ने रामराज के स्थान पर एक नई अवधारणा सेकुलरवाद (धर्म निरपेक्ष) को आगे बढ़ाया, जिसके वास्तव में सेकुलरवाद के अर्थ का अनर्थ करके साम्प्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़कर और अल्पसंख्यक कठमुल्लावाद का साथ देकर राष्ट्रहित के साथ कुत्सित राजनीति की गई, राजनीतिक दल इस शब्द के आधार पर अपनी संकुचित और विभाजनकारी नीतियाँ बनाकर देश को सम्प्रदायों का गढ़ बना रहे है, धर्म का अर्थ कर्त्तव्य से है और कर्त्तव्य को ही त्याग दे, तो उसे अधर्म कहा जाएगा, जैसे धर्म को वर्ग विशेष के साथ संबन्ध किया, वह सम्प्रदाय में बदल गया और उसके गहन रूप में ढलकर आज हमारे सामने विनाशकारी समस्या के रूप में खड़ा है।

निराकरण के उपाय

साम्प्रदायिकता के दुष्परिणामों को नियंत्रित करने तथा पुनरावृत्ति करने से रोकने के लिए निम्नलिखित उपाए किए किए जा सकते हैं–

उदार राष्ट्रवादी भावना को प्रोत्साहन

साम्प्रदायिकता समाज को तोड़कर बिखेर देती है, एक सभ्य समाज, आपस में मिल–जुलकर शान्तिपूर्वक रहने वालों से बनता है, जो अपने साथ ही दूसरों को भी समान आदर भाव दे, सम्प्रदाय की कटुता मिटाने के लिए अपने सोचने का तरीका बदलना होगा और दृष्टिकोण विस्तीर्ण करना होगा ताकि हम दूसरे धर्म, राष्ट्रों आदि के धर्म–स्थलों, प्रतीकों तथा भावनाओं का भी उतना ही प्यार और सम्मान दे, जितना कि अपने धर्म या पूजा स्थलों को देते है, दूसरे देशों को भी स्वदेश के समान सम्मान दें। सभी ईश्वर की संतान है, यही हमारी राष्ट्रीय पहचान का मूलमंत्र होगा।

सार्वभौमिक विचारधारा का जन्म

भारत बहुरंगी, बहुधर्मी, भाषी–बोलियों का देश है, प्रत्येक व्यक्ति का केवल अपने धर्म, फैलाया जाए अपने मातृधर्म, भाषा आदि के साथ अन्य धर्म, भाषा, संस्कृति व राष्ट्र के प्रति सार्वभौमिक विचार विकसित करे, जिसमें कोई धोखा, छल–कपट या दिखावे की प्रवृत्ति न हो, हमें वास्तविक और सत्य पर आधारित राष्ट्रीय आदर्शों का पूर्ण सात्विकता से पालन करना चाहिए।

धार्मिक सहिष्णुता

धर्म के आधार पर अलग पहचान कायम करने के स्थान पर, धर्म के नाम पर रूढ़ियों को आबद्ध करके उसका क्रमिक विकास न रोके, धर्म आस्था का विषय है एक धर्म को मानने वाला अन्य धर्मों के प्रति भी अपनी श्रद्धा रखे इसमें कोई बुराई नहीं, धर्म की गहराई जानने वाला सबकों साथ लेकर चलने में विश्वास करता है न कि उनको बहिष्कृत करके।

स्वच्छ और नैतिकतापूर्ण राजनीति

आज राजनीति की जो स्थिति है, उसमें ऐसी कल्पना भी मुश्किल है, किन्तु राजनीति अपने इस स्वरूप में जन्म से नहीं थी अरस्तु, चाणक्य जैसे महान राजनीतिक अर्थपूर्ण राजनीति के जनक माने जाते है। ऐसा तभी हो सकता है जब राजनीति के सदस्यगण इसको सत्ता का घर न मानकर जनसेवा का माध्यम समझे यदि ये अपनी वास्तविक नीतियों का कुछ सीमा तक ही सही, पूर्ण निष्ठा के साथ पालन करें, तो समाज में वास्तविक प्रेम और एक अलग मुकाम हासिल कर सकते है।

वृहद दृष्टिकोण

हमें वस्तुओं और कार्यों के संबंध में दृष्टि की सीमा बढ़ानी होगी, कुएँ के मेंढक की स्थिति से बाहर निकलना होगा, परोपकार, कल्याण और जनहित ही मनुष्य के कर्त्तव्य है, समाज देश और संसार रूपी प्राणियों और मनुष्यों के लिए समान रूप से उपलब्ध है न केवल किसी एक विशेष प्रजाति, धर्म, समुदाय के लिए।

सरकार और जनता के मध्य पारस्परिक सहयोग भावना

सरकार जनता के प्रति अपने कर्त्तव्य, कार्य और दायित्व यदि सही ढंग से निर्वाह करने लगे, तो फिर किसी भी व्यक्ति को कोई शिकायत नहीं होगी, जनता सुखी होगी और सरकार के कार्य बिना व्यवधान सम्पन्न होंगे, इस प्रकार देश विकास के नए आयाम गढ़ेगा।

सक्रिय तथा न्यायपूर्ण प्रशासन

प्रशासन को अपना तानाशाही रवैया छोड़कर जनता के प्रति सेवा भावना के अपने मूल और सर्वप्रमुख दायित्व को नहीं भूलकर, पूर्ण निष्ठा से पूरा करना चाहिए। शासन को अपने कार्य संचालन में अपनी गलती छिपाने तथा दोषारोपण से बचने हेतु किसी तरह के धर्म, जाति, सम्प्रदाय से संबंधित बयान नहीं देना चाहिए। शासन के प्रत्येक अंग को तटस्थ रहते हुए सक्रियता और न्यायशीलता से अपना कार्य करना चाहिए।

सुरक्षात्मक वातावरण का निर्माण

समाज और देश का वातावरण रक्षात्मक और जीने योग्य बनाया जाए। प्रत्येक व्यक्ति हर समय संगीनों के साए, बंदूकों की आवाजों, दंगों की तबाहियों से मुक्ति चाहता है, ताकि वह अमन से जी सके, भयमुक्त खुशहाल राष्ट्र ही हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

सर्वांगीण व्यापक नैतिक शिक्षा

शिक्षा अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाती है, शिक्षा अज्ञानता को हटाती है, इसे किसी धर्म, राष्ट्र, भाषा की परिधि में कैद नहीं किया जा सकता जब हम सभी धर्मों, भाषाओं, विचारधाराओं को जानेंगे, तभी एक सुराष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे, जहां उपर्युक्त तुच्छ दीवारें विद्यमान नहीं होगी और हमारा समाज और देश उन्नति और नैतिकता के पथ पर आगे बढ़ता जाएगा।

सत्यता पर आधारित वास्तविक सिद्धांत

समाज को विखण्डन और पतन से बचाने के लिए हमारे राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक विचारकों, दार्शनिकों तथा समाज सुधारकों को ऐसे नियम, सिद्धांत केवल कथ्य से बल्कि कर्म से भी अति आदर्शवाद से कभी किसी का भला नहीं होता, हमें अपने निजी स्वार्थ को त्यागकर लोक की भलाई का सच्चा और वास्तविक लक्ष्य अपने सिद्धांतों में प्रमुखता से रखना चाहिए।

निष्कर्ष

वर्तमान परिदृश्य में साम्प्रदायिकता की जो समस्या हमारे समाज और देश में बहुत ही गंभीर रूप ले चुकी है, उसके दुष्परिणाम से कोई अंजान नहीं। यह समस्या नई नहीं है, बल्कि इसका बीजारोपण बहुत पहले हो गया था, किन्तु यह तब इतने विकराल रूप में नहीं थी, जितनी कि अब हो गई है, दूसरी समस्याओं की तरह इसे समाप्त करने के लिए भी हम प्रयत्नशील है, लेकिन केवल अखबारों की सुर्खियों में, सरकारी फाइलों या उनके चुनावी एजेण्डे में यह तो स्पष्ट है कि साम्प्रदायिकता का मुख्य कारण धार्मिक और राजनीतिक है, किन्तु इसे राजनीतिक मुद्दे के तौर पर ज्यादा जाना जाता है, इस समस्या का संबंध हमारी सोच और समझ पर है। हमारे देश के विचारकों ने साहित्यकारों, समाज–सुधारकों ने अपनी–अपनी सीमाओं में निरंतर इस बात का प्रयत्न किया कि देश में भाईचारे और सद्भावना का वातावरण बने, अलगाव की भावनाएं, पारस्परिक तनाव और विद्वेष की दीवारें समाप्त हो, फिर भी इस आग में कभी पंजाब, कभी कश्मीर, कभी बिहार, महाराष्ट्र, कभी गुजरात और उत्तर प्रदेश आदि जलते रहे हैं।

इन घटनाओं की बढ़ती जा रही निरन्तर गति इस बात का प्रमाण है कि हम अभी भी इसे सामान्य–सी समस्या मानकर केवल नेताओं और प्रशानिक तंत्र के माध्यम से इसका हल चाहते है, जो वास्तव में इसके जन्मदाता है, विपक्षी, सत्तासीन सरकार का विरोध करने के लिए स्वयं ही लोगों की भावनाओं को भड़काकर उन्हें सम्प्रदायिकक दंगों की आग में झोंक देते है। इन दंगों–फसाद में न जाने कितने मासूम बच्चे, निर्दोष परिवार अपनों से बिछड़ जाते है और मौत को प्राप्त हो जाते है, महिलाओं से दुराचार किया जाता है। एक–दूसरे के धर्म–स्थलों को नुकसान पहुँचाया जाता है। सरकारी संपत्ति की बर्बादी की जाती है। कानून–व्यवस्था और शान्ति तो जैसे समाप्त हो ही जाती है। साम्प्रदायिक सौहार्द्र बिगाड़ने वालों का कोई धर्म–ईमान नहीं होता वे केवल इसी तलाश में रहते है कि कब और कैसे ऐसे मौके मिले, विभिन्न धार्मिक दल और गुट जैसे विहिप, सिमी आदि धार्मिक कट्टरता के नाम पर समाज और देश में अशान्ति फैलाते है। निर्दोष लोगों पर अपना गुस्सा उतारते है, इनका सिर्फ यही मकसद होता है कि धर्म के नाम पर अपनी प्रभुसत्ता कायम की जाए, अभी हाल ही में कुछ धार्मिक गुटों ने यह निर्णय लिय है कि वे भी हिन्दुस्तानी मुजाहिदीन नाम से अपना एक संगठन तैयार करें, यह मानसिकता ऐसा ही है कि बुराई से लड़ने के लिए खुद भी बुरे बन जाओं, जबकि हमारे देश के आर्दशों में ऐसी भावना कभी नहीं रही।

यह हमारी वर्तमान की पहचान है, जबकि हमारी नीतियों और सिद्धांतों से दूसरे देश सीखकर हमसे आगे निकल गए। कुछ समय पूर्व तक हमारे देशवासियों के बारे में यह राय होती थी कि हम भारतवासी चीजों को काले और गौरे में विभाजित नहीं करते, बल्कि एक ऐसा रास्ता अपनाते है, जो सभी को उचित प्रतीत हो, यही सहयोगी भावना हमारी एकता और संस्कृति है, किन्तु इसी भारत के वासी जब धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर घृणित घटनाओं को अंजाम देते है तो देश में रहने वाले और देश से बाहर रहने वाले करोडों निर्दोष और सात्विक प्रवृत्ति वाले व्यक्तियों की ऑखे शर्म से झुक जाती है इस पर सरकारों का ठण्डा रवैया और पीड़ित व्यक्तियों की उपेक्षा फिर से इसकी जड़े फूटने लगती है।

इस समस्या के समाधान की शुरूआत अब हमें बिल्कुल प्रारंभ से अर्थात् बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा उनकी माताएं इस शिक्षाप्रद सीख से करें कि हम हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, होते हुए भी पहले एक इंसान है

और इसीलिए दूसरे इन्सानों से प्रेम करना ही हमारा कर्त्तव्य है, ऐसे वातावरण में ही बच्चे अपने जीवन को दुष्ट प्रवृत्तियों और निकृष्ट सोच के कारण पथभ्रष्ट नहीं होंगे और तभी हम अपनी सभ्यता–संस्कृति जिसका वाहक हमारा देश अनन्त काल से रहा है, व रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *गाबा, ओमप्रकाश – राजनीति सिद्धांत की रूपरेखा*
2. *डॉ. फड़िया बी.एल. – पाश्चात्य राजनीतिक चिंतन का इतिहास*
3. *गाबा, ओमप्रकाश – समकालीन, राजनीतिक सिद्धांत*
4. *गाबा, ओमप्रकाश – राजनीति विज्ञान, विश्वकोश*
5. *गाबा, ओमप्रकाश –समकालीन राजनीति सिद्धांत*
6. *डॉ. फड़िया बी.एल. – अन्तर्राष्ट्रीय कानून प्रतियोगिता दर्पण*
7. *डॉ. नेमा जी.पी., डॉ. शर्मा के.के. – मानवाधिकार सिद्धांत एवं व्यवहार*
8. *प्रतियोगिता दर्पण*
9. *नूहिन जैदी – साम्प्रदायिकता के दुष्परिणाम*